# विशाल जैन मूर्तियों में भारत की आत्मा

''विशाल मूर्ति निर्माण परम्परा एवं मांगीतुंगी के ऋषभदेव'' शीर्षक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रो. जे.सी. उपाध्याय ने कहा कि मूर्ति निर्माण परम्परा के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता में भी प्राप्त होते हैं ।मूर्तियों के निर्माण के ऐतिहासिक साक्ष्य 2000 वर्ष से अधिक प्राचीन हैं। यूनानियों के आगमन के बाद इनकी निर्माण शैली में महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए। विशाल जैन मूर्तियों की मुखाकृतियों में भारत की आत्मा के दर्शन होते हैं, क्योंकि ये साम्प्रदायिक सौहार्द्र, सत्य और अहिंसा का संदेश देती है ।

संगोष्ठी के प्रस्ताविक वक्तव्य में डॉ. अनुपम जैन ने दुनिया में बनी विशाल मूर्तियों की चर्चा करते हुए बताया कि चीन, जापान, रशिया, अमेरिका सभी जगह की मूर्तियां सीमेंट कांक्रीट से बनी हैं। अफगानिस्तान में बनी मूर्तियाँ उकेरी हुई थीं। बावनगजा जी की मूर्ति भी उकेरी गई है किन्तु मांगी–तुंगी में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से बनाई जा रही 108 फीट ऊँची मूर्ति अखण्ड पाषाण से निर्मित है एवं श्रवणबेलगोला के बाहुबली से लगभग दूनी ऊँची है ।

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ द्वारा 2.08.15 को आयोजित उक्त संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए श्री श्री सूरजमल बोबरा, निदेशक ज्ञानोदय फाउण्डेशन ने कहा कि पौराणिक संदर्भों की उपेक्षा नहीं की जाना चाहिए क्योंकि इनमें ऐतिहासिकता छिपी रहती हैं। विशाल मूर्तियों के क्रम में बावनगजा की मूर्ति एवं श्रवणबेलगोला की मूर्ति में कला की दृष्टि से बहुत अंतर है किन्तु दोनो श्रमण परम्परा के पुरुषार्थ को प्रतिबिंबित करती है ।

मांगीतुंगी के ऋषभदेव की विशाल मूर्ति जो गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से 20 वर्ष में बनकर तैयार हो रही है उसे विश्व के आश्चर्यों में सम्मिलित किया जाना चाहिये ।

डॉ. सुरेखा मिश्रा पुस्तकालयाध्यक्ष ने बताया कि भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की पहचान मूर्तिकला और चित्रकला से जानी जाती है । सम्राट भरत ने कैलाश पर्वत पर 72 जिनालयों का निर्माण करके रत्नों की प्रतिमायें विराजमान की अत: यह मानना होगा कि मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभ में मूर्तियों का निर्माण प्रारंभ हो गया था।

युवा विद्वान डॉ. भरत शास्त्री ने बताया कि प्रतिष्ठा प्रदीप में लघु और विशाल मूर्ति की जानकारी प्राप्त होती है । आचार्य वसुनंदीजी ने भी मूर्तियों के बारे में बताया है। डॉ. सुशीला सालगिया ने कहा कि मिस्र में भी करीब 5000 वर्ष पुरानी मूर्तियाँ प्राप्त होती है । कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती उषा पाटनी के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ आभार डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल ने माना । सशक्त संचालन संस्था के सचिव डॉ. अनुपम जैन ने किया ।

– डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर

## संलेखना या संथारा... पेज नं. 1 का शेष....

इस परम सत्य को पहचान लिया है और इसे पहचान कर वह मृत्यु को भी जीता है न कि आत्महत्या करता है । आत्महत्या तो कायरता है आत्महत्या करने वाला जीवन को भी मृत्यु के समान भोगता है । यह तो हुआ वैज्ञानिक पक्ष संलेखना एक पूर्णतः वैज्ञानिक प्रक्रिया है न कि अस्वाभाविक या अवैज्ञानिक ।

आईये हम दूसरे और पहलू पर नजर डालते है । भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है । जहाँ कई धर्मो के अनुयायी रहते है और अपने अपने धर्मो के अनुसार व्रत, उपवास आदि को धारण करते है और ऐसा करने के दौरान यदि वह मरण को प्राप्त हो जाता है तो क्या उसे आत्महत्या कहकर दण्डित करते है यदि ऐसा करेंगे तो भारत से धर्म का नामो निशान मिट जायेगा । चारों तरफ अराजकता ही अराजकता फैल जायेगी । कोई भी नियम, संयम धारण नहीं करेगा सिर्फ पशुवत जीवन ही जीयेंगे ।

जिस धर्म में जिस दर्शन में भगवान महावीर का संदेश जियो और जीने दो, अहिंसा परमो धर्मः हो वहाँ आत्महत्या तो क्या दूसरे के दिल को दुखाने को भी हिंसा माना गया है । फिर वहाँ अपना या दूसरे के प्राणों के घात की बात भी कैसे की जा सकती है वह तो साक्षात महापाप महाहिंसा ही है। संथारा या संलेखना का लक्ष्य मृत्यु नहीं अपितु जीवन और मृत्यु से मुक्ति पाना है । जहाँ मनुष्य जन्म को पाना ही अत्यंत दुर्लभ माना है तो उसके घात करने की भावना भी मन में लाना इस दुर्लभतो को खो देना है किन्तु शरीर एक नौका है जो इस जीवन से पार लगाता है जब किनारा आ जाये तो उस नौका से उतरना भी आना चाहिये, नहीं तो किनारे पर भी आकर मनुष्य डूब जाता है । बस नौका से सावधानीपूर्वक उतरने की कला ही संलेखना है इसमें जीवन विरोधी तत्व नहीं, जीवन से पलायन नहीं, जीवन घाती नहीं अपितु मृत्यु को जीने की कला है । जो वो अज्ञानी व्यक्ति नहीं जान सकता जिसको लगता है कि संलेखना या संथारा आत्महत्या है । जैनी ही नहीं अपितु इतर जैन समाज में भी समता पूर्वक मरण करने की चाह होती है । भारत के एक गणमान्य व्यक्ति श्री विनोबा भावेजी ने भी 9 नवम्बर 1982 में संलेखनापूर्वक मरण किया जिसकी अनुशंसा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने की । पहले तो उन्होंने विनोबाजी से प्रार्थना की कि अभी देश को आपके जैसे संत की जरुरत है आप आहार, पानी न छोड़े किन्तु विनोबाजी के उत्तर से वे निरुत्तर हो गयी और उनके इस कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की । विनोबाजी का उत्तर था 'अब मेरे और मेरे परमात्मा के बीच कोई नहीं आये मैंने इस शरीर को जीवन भर खूब भरण पोषण किया अब यात्रा पूर्ण हो चुकी है मुझे इस यात्रा में अब कोई अवरोध नहीं चाहिये'। जी हाँ परमात्मा से आत्मा के मिलन का एक ही साधन है संलेखना । जिसने एक बार संलेखना पूर्वक मरण कर लिया उसे 3–4 भव से ज्यादा इस संसार में भटकना नहीं पड़ता। जन्म मरण नहीं करना पड़ता । लेकिन यह बात वह अज्ञानी नहीं जान सकता जो ये समझता हो कि शरीर को भोजन पानी देते रहने से वह अमर बना रहेगा। जैसे वो इस संसार में अमर बेल खाकर आया है और उसका मरण कभी नहीं होगा । जिसका जन्म हुआ है उसका मरण तो अवश्यभावी है । बस उसको देखते हुए समतापूर्वक जो मरण कर लेता है वही इस भव से पार हो जाता है ।

संलेखना का अधिकारी हर कोई नहीं होता । कुछ विशेष परिस्थितियों में ही संलेखना धारण करने का अधिकार है आचार्य समन्तभद्रस्वामी ने रत्नकरण्डश्रावकाचार में कहा है – दुर्भिक्ष आने पर, उपसर्ग आने पर, बुढ़ापा आने पर एवं असाध्य रोग हो जाने पर जहाँ जीवन की संभावना न हो तब संलेखना धारण की जाती है । जिसमें न जीने की इच्छा होती है और न मरने की । मरने की इच्छा करना ही संलेखना का अतिचार कहा गया है फिर उसे आत्महत्या कैसे कह सकते है।

आत्महत्या तो विपरीत परिस्थिति आने पर आवेश में, क्रोध में , जीवन से हारकर हताशापूर्वक, कायरतापूर्वक जीवन से पलायन करने के उद्देश्य से की जाती है जो निश्चित ही महापाप है, कैसे कोई इस कुकृत्य को संलेखना के समकक्ष कह सकता है जबकि संलेखना पूर्णत: होश में, संयम पूर्वक, अपनी कषायो को कम करते हुए, उत्साहपूर्वक, वीरतापूर्वक, मनुष्य जीवन को सार्थकता प्रदान करने के उद्देश्य से धारण की जाती है जो कि निश्चित ही प्रशंसनीय है ।

संलेखना हर संत की अंतिम अभिलाषा है क्योंकि भव्य विशाल मंदिर बना लेने पर भी यदि उस पर कलशारोहण नहीं होता तो वह मंदिर अपूर्ण माना जाता है उसी प्रकार जिंदगी भर की साधना रुपी मंदिर में जब तक संलेखना रुपी कलशारोहण नहीं होता वह साधना अपूर्ण रह जाती है । जिस प्रकार अंतिम परीक्षा की पूरी तैयारी कर लेने पर भी परीक्षा में न बैठे तो उसका पढ़ना ही व्यर्थ है । बस संलेखना जिंदगी की पढ़ाई की अंतिम परीक्षा है जिसने यह परीक्षा अच्छे ढ़ंग से दे दी वही इसमें उत्तीर्ण होकर आगे बढ़ता है नहीं तो बार बार कई भवों तक उसे इसकी पढ़ाई करते रहना पड़ती है । अंत में मैं यही कहना चाहूंगी –

**आत्महत्या नहीं आत्मसाधना है संलेखना**

**जीवन से पलायन नहीं, अंतिम लक्ष्य को पाना है संलेखना**

**जन्मोत्सव तो सब मनाते है पर मृत्यु को महोत्सव मनाना है संलेखना**

– अर्चना जैन, सहसंपादिका

''प्रयास'' रिश्तों को जोड़ने का

इस वर्ष सिद्धक्षेत्र पवाजी के मेले में अ.भा. स्तर पर समग्र दिगम्बर जैन समाज के विवाह योग्य प्रत्याशियों की विस्तृत जानकारी वाली पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है । इस भावना को मूर्तरूप देने के उद्देश्य से हमने हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधियों के सहयोग से प्रयास 'रिश्तों को जोड़ने का'' युवक युवती परिचय पुस्तिका के फार्म उपलब्ध कराये है । फार्म को भरने की अंतिम तिथि 20 अक्टूबर 2015 रखी गयी है। पुस्तिका का विमोचन पावागिरी के वार्षिक मेले में 29 नवम्बर 2015 को किया जायेगा । आपके नगर के मंदिरों में ''प्रयास'' रिश्तो को जोड़ने का के प्रविष्टी फार्म उपलब्ध करा दिए गये है । प्रविष्टि फार्म आप हमारी वेबसाईट www.golalariya.com पर से फार्म डाउनलोड कर सकते है एवं प्रविष्टि फार्म एवं बैंक में जमा राशि की रसीद की फोटोकॉपी हमें golalariya.darshan@gmail.com अथवा golalariya_darshan@yahoo.in पर भेज सकते है । यदि आपके नगर में प्रविष्टि फार्म उपलब्ध नहीं हो पा रहे हो तो आप निम्न नंबरों पर संपर्क कर सकते है – 9425903301, 9425958188, 9329524227, 9407453066 निम्न प्रकाशित फार्म की फोटोकॉपी भी स्वीकार की जावेगी । बैंक में राशि जमा करने की स्थिति में 200+50 (बैंक प्रभार) = 250 रु. जमा करें ।